IJAER/May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

शहरी एवम ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी जीवन मे समायोजन का अध्ययन

Neelam vikas sukhdeve

Lecturer , G,H,S,School _Temri,Durg

Dr Manoj Kumar Maury

Assistant Professor ,Bharti university ,Pulgaon chouk ,durg

शोध सार

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण उन्नति में सहयोग देती है व उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है | मानव को अपने वातावरण में समायोजन करने में सहायता प्रदान करती है साथ ही जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए भी तैयार करती है एवं व्यवहार, विचार तथा दृष्टीकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो परिवार, समाज, देश व विश्व के लिए हितकर होता है | वहीँ मानव जीवन का दूसरा नाम समायोजन है, जब व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो वह अपनी परिस्थिति या वातावरण से समायोजन कर लेता है | प्रत्येक व्यक्ति की सफलता का रहस्य उचित समायोजन है |

मुख्य शब्द : किशोर, समायोजन क्षमता, उच्चतर माध्यमिक स्तर |

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की प्रदत्त शक्तियों का विकास करती है, जिसके कारण ही उसे समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है | व्यक्ति यदि श्रेष्ठ एवं समायोजित हो तो प्रशस्ति के मार्ग में अपना परचम लहराते है | इन्ही भावों के संदर्भ में हम शिक्षा के महत्व की विवेचना कर सकते है, जिसमे शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योतिर्यमय सुसंस्कृत पक्ष है जहाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास होता है | निरंतर सीखना व समायोजन कर मानव प्रत्येक दिशा में ऊँचे शिखर पर चढ़ने में समर्थ हो सकता है | शिक्षा मानव के व्यक्तित्व के समायोजन एवं परिपक्व होने के लिए सृष्टि का सर्वोत्तम साधन है, जिसमें शिक्षित होना व स्वयं को समायोजित करना आधार स्तम्भ है |

समायोजन का अर्थ है "अनुकूलन", जब कोई व्यक्ति समायोजित होता है तो उसकी प्रतिक्रियाएं, उसका ज्ञान, भाव, विचार व आचरण, मन परस्पर समन्वित होते है और वातावरण के अनुकुलित पाए जाते है, यदि ये अनुकूलन न हो तो मानसिक रूप से तनाव, कुंठा, अशांति,

चिडचिडापन आदि के रूप में कुसमयोजन दृष्टिगोचर होता है | अतः इस समायोजन क्षमता को विकसित करने में परिवार एवं विद्यालय के साथ-साथ शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, शिक्षकों एवं विद्यार्थियो का संबंध अति आवश्यक है, जो विद्यार्थियों के समायोजन का विकास के साथ तनाव को कम करने, चुनौतियों का सामना करने के लिए भी प्रेरणा देते है |

शोध अध्ययन

ए पटेल (2016)- द्वारा सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के समायोजन पर शोध किया गया |

निष्कर्ष :- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में लड़को की तुलना में लड़कियां अधिक समायोजित पाई गई |

बलवान सिंह (2018) – द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया गया |

निष्कर्ष :- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया |

जोयमाल्या परमानिक (2014) – द्वारा उच्चतर माध्यमिक शाला के छात्रों में समायोजन को उनके लिंग एवं आवासीय क्षेत्रों के बीच शोध का विषय लिया गया |

निष्कर्ष :- पुरुलिया पश्चिम बंगाल के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो में रहने वाले छात्रो के समायोजन के बीच महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया जबकि लड़को की तुलना में लड़कियां अधिक समायोजित पाई गई |

समस्या कथन

विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर एक अध्ययन |

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उददेश्य है -

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य के अंतर का अध्ययन करना |
2. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य के अंतर का अध्ययन करना |
3. शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य के अंतर का अध्ययन करना |

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया है –

परिकल्पना H1 . ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

परिकल्पना H2 . ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

परिकल्पना H3 . शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

अध्ययन की परिसीमायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवी में अध्ययनरत (120) छात्र एवं छात्राओं का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया |

शोध उपकरण

शोधकर्ता ने परिकल्पना के परिक्षण के लिए डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव एवं डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित समायोजन मापनी उपकरण का प्रयोग किया है, जिसमे कुल 80 प्रश्न है, इन प्रश्नों का उत्तर "हाँ" या "नहीं" में देना है | फ़लांकन के लिए दिये निर्देशानुसार अंको का वितरण किया गया है सकारात्मक उत्तर प्राप्त होने पर 1 अंक तथा नकारात्मक उत्तर प्राप्त होने पर 0 अंक वितरण किया गया है |

आंकड़ों का विश्लेषण

परिक्षण में प्राप्त आंकड़ो द्वारा मध्यमान प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों चरों के मध्य टी मान द्वारा सार्थकता का स्तर ज्ञात किया गया है |

परिकल्पना क्रमांक – 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

तालिका 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता का सांख्यकीय विवरण

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	ग्रामीण एवं शहरी छात्र	56	99.03	13 .81	13.2
2	ग्रामीण एवं शहरी छात्राएं	64	89.79	13.67	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है की 118 df के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य से P का मान अधिक है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है |

अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया |

परिकल्पना क्रमांक – 2

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

तालिका 2

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य समायोजन क्षमता का सांख्यकीय विवरण

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	ग्रामीण छात्र	28	112.78	13.44	7.296
2	ग्रामीण छात्राएं	32	94 .32	1.33	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है की 58 df के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य से P का मान अधिक है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है |

अतः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया |

परिकल्पना क्रमांक – 3

शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा |

तालिका 3

शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य समायोजन क्षमता का सांख्यकीय विवरण

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	शहरी छात्र	28	92.5	14.83	4.719
2	शहरी छात्राएं	32	85.44	13.41	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है की 58 df के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य से P का मान अधिक है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है |

अतः शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया |

निष्कर्ष

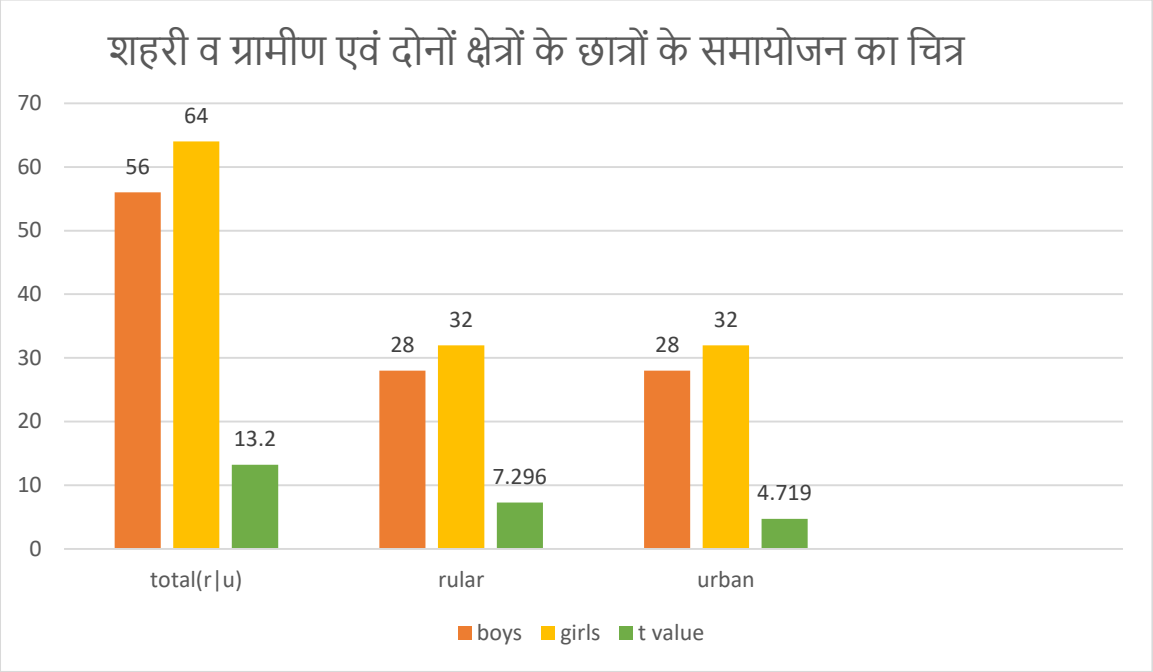

परिकल्पनाओं के परिणाम से यह स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में अंतर पाया जाता है | इसका प्रमुख कारण यह है कि दोनों ही क्षेत्र के विद्यालय में पढाई का स्तर सामान नही है, शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी एवं अभिभावक भाषा के अध्ययन के लिए ज्यादा आवश्यक नही मानते अपितु बच्चे की रूचि योग्यताएं एवं क्षमताओं के आधार पर शिक्षा के अवसर प्रदान करते है |

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता में अंतर पाया जाता है, जिसका कारण यह भी हो सकता है कि इन बच्चो की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक परिस्थितियां रुचियाँ सामान नही है | साथ ही आज भी हमारे समाज में बालकों व बालिकाओं में भेदभाव किया जाता है |

सुझाव

1. शिक्षको द्वारा छात्रों को उचित समायोजन स्थापित करने के लिए प्रेरणा दिया जाना चाहिए |
2. सामान्य अभ्यास के साथ नैतिक मूल्यों पर भी ध्यान देना चाहिए |
3. छात्रों से कोई भी भेदभाव नही करना चाहिए |

4. समायोजन क्षमता को बढ़ावा देने के लिए सर्जनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए |

अनुकरणीय अध्ययन

1. दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाले व स्थानीय छात्र छात्राओं के समायोजन पर एक अध्ययन |
2. शरीरिक रूप से विकलांग व सामान्य बच्चों के मध्य समायोजन पर एक अध्ययन |
3. खिलाडी व सामान्य बच्चों के मध्य समायोजन पर एक अध्ययन |
4. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन |
5. कार्यरत अभिभावक व अकार्यरत अभिभावक के बच्चों के मध्य घरेलु समायोजन पर एक अध्ययन |

संदर्भ ग्रंथ सूची

ए पटेल (2016) – एडजस्टमेंट ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल इम्पैक्ट, रिव्यू 1 (2), पृष्ठ 14-20

बलवान सिंह (2018) – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल एजुकेशन जर्नल चेतना, vol3 ,पृष्ठ 195-200

भटनागर सुरेश (2005) - शिक्षा मनोविज्ञान सूर्या पब्लिकेशन निकट गर्वमेंट इंटर कॉलेज, मेरठ 250001

सरीन शशिकला एवं सरीन अंजनी (2005) - शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

जोयमाल्या परमानिक बीएस (2014) - एडजस्टमेंट ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स विथ रिसपेक्ट टू जेंडर एंड रेसिडेंस, अमेरिकन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 2 (12) पृष्ठ 1138 -1143